IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"बालक के सामान्य रोग पर: एक अध्ययन"

डॉ रंजू यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
गृह विज्ञान विभाग
बापू पी० जी० कॉलेज
पीपीगंज गोरखपुर।

मानव जीवन ईश्वर की अमूल्य निधि है एक माँ नौ माह तक अपने शिशु के जन्म लेने कल्पना की करती है। यदि जन्म के बाद उसका शिशु पूर्ण स्वास्थ और हृष्ट–पुष्ट नहीं होता है तो कल्पना की जा सकती है कि उस मां की क्या स्थिति होगी मानव जीवन ईश्वरी देन है किंतु स्वस्थ ईश्वरी देन नहीं है। इसे व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा अर्जित किया जाता है तथा व्यक्तिगत स्वयं प्रयासों द्वारा ही सुरक्षित रखा जाता है।

बालक का शारीरिक विकास, सामान्य बीमारियों से प्रभावित होने का कारण है बालक जन्म से ही बीमार एवं विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त होते हैं। तथा उनका शारीरिक विकास अवरुद्ध होता है। बीमारी की दशा में बालक को कुछ भी खाना–पीना अच्छा नहीं लगता है इस कारण बच्चे का खाना, पीना, खेलना आदि क्रिया को सही से नहीं करता है बल्कि रोता तथा बिस्तर पर सुस्त पड़ा रहता है। इस कारण वह निर्बल तथा कमजोर हो जाता है। उसको पूरा पोषण ना मिल पाने के कारण बालक का शारीरिक विकास बाधित हो जाता है।

बालक के पाचन संबंधी रोग जैसे– अतिसार (Diarrhoe) बच्चों का एक सामान्य रोग है यह रोग गरीबी, अज्ञानता तथा वातावरण के कारण होता है। यह रोग शिशुओं में अधिक पाया जाता है। असंक्रामक डायरिया जीवाणु के संक्रमण के कारण नहीं होता है। यह शिशु को दूध के अलावा कुछ नए खाद्य पदार्थ देना, खाद्य पदार्थों के प्रति एलर्जी होना, पाचक रसों का पर्याप्त मात्रा में स्रावित होना, शिशु के दाँत निकलना आदि दीर्घकालीन बीमारी में परहेज के बाद एकदम से आहार देने से होता है।

पाचन संबंधी रोग डायरिया, पेचिश, कब्ज, दूध पलटना,मन या पेट में कीड़े।

श्वसन संबंधी रोग सर्दी, जुकाम, खाँसी, निमोनिया, ब्रोंकाइटिस, दमा, काली खाँसी, डिप्थीरिया।

त्वचा संबंधी रोग फोड़े फुंसी, एलर्जी, आँख खुजलाना, लाल होना, जलन, दाद खाज आदि।

कुपोषण जनित संबंधी रोग क्वाशियोरकर, मरास्मस, विटामिन ए०बी० जनित रोग, बेरी बेरी, स्कर्वी, रिकेट्स, एनीमिया आदि।

श्वास संबंधी रोगों में आंख से पानी आना, गले में खरास, जुकाम, छिकना, खासना, बुखार, सिर में दर्द, गले में दर्द व खरखराहट आदि लक्षणों से श्वास जनित रोग होते हैं। तथा त्वचा संबंधी रोगों में फोड़े फुंसी होना त्वचा पर छोटे–2 पस युक्त दाने निकलना व्यक्तिगत स्वच्छता का अभाव, अत्यधिक गर्मी, खून खराबी, कुपोषण आदि इसके प्रमुख कारण है। इसी प्रकार स्वसन वायु द्वारा समवाहित रोग जैसे– चेचक, चिकन पॉक्स, खसरा, गलसुए या कर्णफेर, कुकर खाँसी, मस्तिष्क भारी, ज्वर डिप्थीरिया, (कंठ रोहिणी) इनफ्लुएंजा, तपेदिक, पोलियो, हैजा, पेचिश, एनफिलिज मलेरिया आदि रोग होने पर बालक का शारीरिक विकास रुक जाता है तथा बच्चा शारीरिक रूप से असहाय एवं कमजोर महसूस करने लगता है।

क्या आपके द्वारा बच्चे का टीकाकरण कराया गया :–

क्र० स०	टिकाकरण	आवृति	प्रतिशत %
1	बी०सी०जी०	12	3%
2	डी०टी०पी०	8	2%
3	पोलियो की खुराक	28	7%
4	उपरोक्त सभी	352	88%
योग		400	100%

बच्चे को स्वस्थ शूक्ष्म बीमारियों पर नियंत्रण पाने के लिए जन्म से ही रोग निरोधक टीके लगाने की जरूरत है प्रत्येक माता–पिता के लिए इस प्रतिरक्षात्मक टीके की उचित जानकारी होनी चाहिए जैसे कि विभिन्न प्रतिरक्षण कब कहाँ कैसे और क्यों लगते हैं। इसके अतिरिक्त 9 महीने या अधिक पर खसरे का प्रतिरोधी टीका लगाना चाहिए। मीजल्स, पम्पस, रूबेला आदि की दवा दी जानी चाहिए।

साक्षात्कार निरीक्षण द्वारा देखा गया कि आपके द्वारा बच्चे का टीकाकरण कराया गया बी०सी०जी० 3% डी०पी०टी० 2% पोलियो की खुराक 7% उपरोक्त सभी 88% टीकाकरण पाया गया।

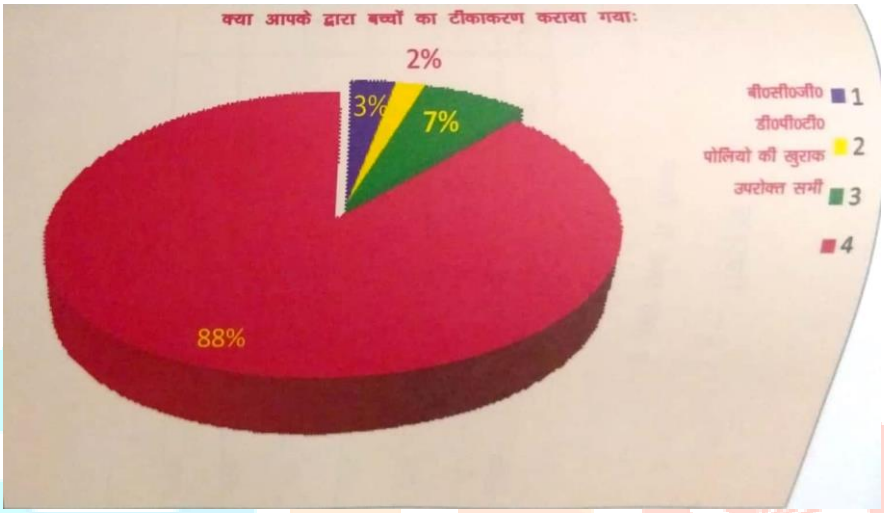

आपके बच्चे को डायरिया होती है :–

क्र० स०	डायरिया	आवृति	प्रतिशत %
1	सर्दी से	52	13%
2	गर्मी से	224	56%
3	बरसात से	96	24%
4	हमेशा	28	7%
योग		400	100%

अतिसार (Diarrhoea) बच्चों का एक सामान्य रोग साधारणतः शिशुओं में यह रोग अधिक पाया जाता है, विशेष रूप से उन बच्चों को जो ऊपर से दूध द्वारा पोषित किए जाते हैं। असंक्रामक डायरिया दूध के अलावा कुछ नए खाद्य पदार्थ देना खाद पदार्थों के प्रति एलर्जी होना, पाचक रसों का पर्याप्त मात्रा में स्रावित होना, शिशु के दाँत निकलना आदि संक्रामक अतिसार जीवाणु के संक्रमण से होता है। यह संक्रमण 'ई० कोलाई' जीवाणु द्वारा होता है यह संक्रामक इतना भयानक होता है कि समुचित उपचार के अभाव में शिशु की मृत्यु तक हो जाती है।

उपरोक्त आंकड़ों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि आपके बच्चे को डायरिया होता है सर्दी में 13% गर्मी में 56% बरसात में 24% हमेशा 7% देखा गया गोरखपुर क्षेत्र के बच्चों पर अध्ययन में पाया गया कि गर्मी के मौसम में सबसे ज्यादा बच्चे डायरिया से ग्रसित पाए गए।

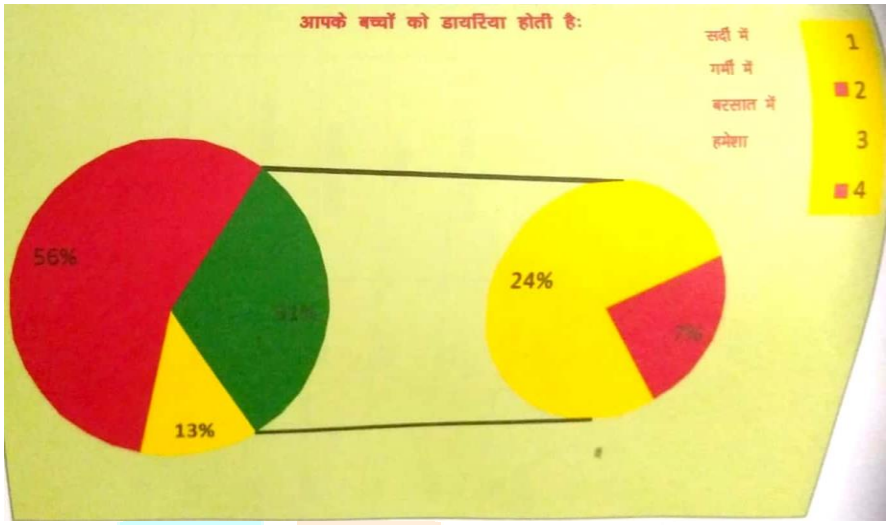

क्या आपका बच्चा है निम्न रोगों से ग्रसित है :–

क्र० स०	रोग	आवृति	प्रतिशत %
1	खसरा/डिपथीरिया	12	3%
2	चेचक	28	7%
3	काली खाँसी	24	6%
4	उपरोक्त कोई नही	336	84%
योग		400	100%

बच्चों में होने वाले संक्रामक रोग खसरा, छोटी माता, कर्णफेर, डिप्थीरिया, पीलिया, पोलियो आदि रोग होते हैं। यह रोग बच्चे के स्वास्थ्य को गंभीर हानि पहुंचाते हैं। अतः रोग से पीड़ित बालक की उपयुक्त परिचर्या करनी चाहिए तथा रोग के निदान का समुचित उपाय करना चाहिए।

वायु द्वारा संवाहित रोग जुकाम, खाँसी, इनफ्लुएंजा, चेचक, खसरा, छोटी माता, कर्णफेर, डिप्थीरिया शीत ऋतु में फैलने वाला वायु जनित संक्रमण है, जो अधिकांश 4–10 वर्ष के बच्चों को होता है। इसे गलछोटू भी कहते हैं। इससे बचने के लिए डी०पी०टी० का संयुक्त टीका लगाया जाता है। यह रोग कार्नी बैक्टीरियम डीपथिरी (cornybacterium Diftheriae) जीवाणु द्वारा होता है। यह जीवाणु ग्रसनी, नाक तथा स्वर यंत्र पर प्रभाव डालते हैं। उत्तर दाताओं द्वारा पाया गया कि बच्चा निम्न रोग से ग्रसित है। खसरा/डिप्थीरिया 3% चेचक 7% काली खांसी 6% उपरोक्त कोई नहीं 84% बच्चे देखे गए।

अतः ऐसे बीमारियों में बच्चों का उचित प्रकार से देखभाल अति आवश्यक है तथा सभी बालकों को जन्म के बाद तीसरे चौथे व पांचवें माह में डी०पी०टी० का टीका निर्धारित समय पर लगवा देना चाहिए।

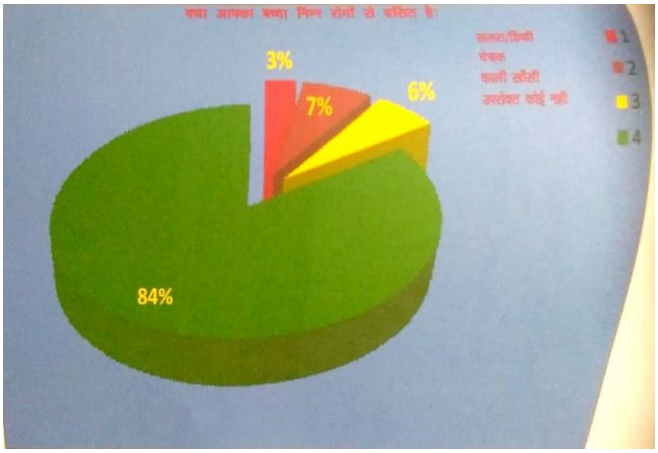

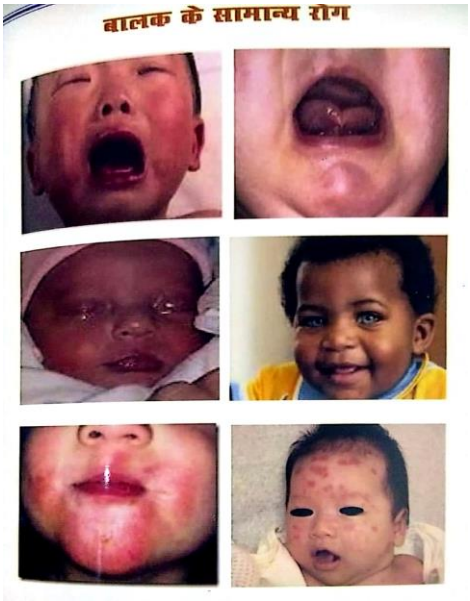

क्या प्रतिरक्षण टीके 6 जानलेवा बीमारियों से बचाता है :–

क्र० स०	प्रतिरक्षण	आवृति	प्रतिशत %
1	हाँ	380	95%
2	नहीं	0	0%
3	कभी–कभी	20	5%
4	कभी नहीं	0	0%
योग		400	100%

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा रोगों से बचाव हेतु प्रतिरक्षण टीका बच्चे को समय–समय पर लगवाना चाहिए ताकि छः जानलेवा बीमारियों से बचाया जा सके।

उत्तर दाताओं द्वारा ज्ञात हुआ कि बच्चे का टीकाकरण कराया गया हां 95% नहीं 0% कभी–कभी 5% कभी नहीं 0% देखा गया सर्वेक्षण के कारण ज्ञात होता है कि तिहाई भारतीय बच्चे जन्म के प्रथम माह में टिटनेस के कारण मर जाते हैं इसी तरह 25% डायरिया से एवं डायरिया डिहाइड्रेसन से प्रतिवर्ष 50 लाख बच्चे मौत के मुँह मे समा जाते हैं जबकि खसरा, डिप्थीरिया, पोलियो और तपेदिक से प्रति वर्ष 52 लाख बच्चे मर जाते हैं।

यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार 22 लाख बच्चे खसरा, 16 लाख काली खाँसी, 12 लाख टेटनस, और नाल काटने 50 हजार पोलियो और 5,000 डिप्थीरिया से मर जाते हैं।

अतः माता–पिता को अपने शिशु स्वास्थ्य का समुचित ध्यान रखना चाहिए तथा शिशु रोग के प्रारंभिक लक्षण उत्पन्न होने पर तुरंत चिकित्सक परामर्श लेना चाहिए।

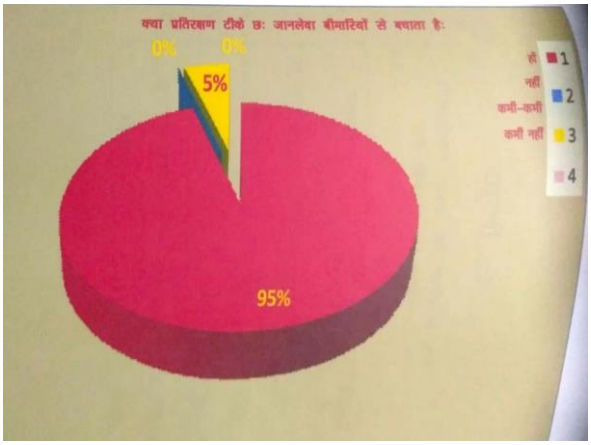

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह डॉ० वृंदा– आहार एवं पोषण विज्ञान– पंचशील प्रकाशन, जयपुर– 2009
2. सिंह डॉ० अनिता– आहार एवं पोषण विज्ञान– स्टार पब्लिकेशन, आगरा– 2008
3. खनूजा डॉ० रीना– आहार एवं पोषण विज्ञान– अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा– 2011
4. टण्डन (मल्होत्रा) डॉ० उषा– आहार एवं पोषण के सिद्धांत– साहित्य प्रकाश, आगरा– 2011
5. बख्शी– श्रीमती भूपेन्दर कौन– आहार एवं पोषण के मूल तत्व– श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2